

„Legyetek azért ti tökéletesek...” (Mt 5:48)

- | | | | |
|-----|-----|--------------------------------------|-----------------------------|
| 1. | Cs. | 2Kor 3:17 | Lélek és szabadság |
| 2. | P. | Ef 3:12 | Bátorság, hit |
| 3. | Sz. | 2Kor 5:19 | A békéltetés szolgálata |
| | | ■ Naplemente: Budapest: 16:04 | <i>Debrecen: 15:52</i> |
| 4. | V. | Péld 8:35-36 | Életet nyerni |
| 5. | H. | ApCsel 13:38-39 | A megigazulás útja |
| 6. | K. | Róm 3:24 | Ingyen kegyelemből |
| 7. | Sz. | Kol 1:21-22 | Isten munkája bennünk |
| 8. | Cs. | Ézs 49:15 | Nem felejt el az Úr |
| 9. | P. | Jn 6:37 | Jézus ígérete |
| 10. | Sz. | Ef 3:17-19 | Szeretetben |
| | | ■ Naplemente: Budapest: 16:12 | <i>Debrecen: 16:00</i> |
| 11. | V. | 1Jn 3:6 | Jézusban maradva |
| 12. | H. | Ézs 58:12 | A romok építői |
| 13. | K. | Mk 5:34 | Megtartó hit |
| 14. | Sz. | Jak 3:12 | Milyen a forrás? |
| 15. | Cs. | Jn 3:21 | Az igazság cselekedetei |
| 16. | P. | Ám 4:13 | A Seregek Istene |
| 17. | Sz. | 2Kor 4:17-18 | A láthatatlanra nézve |
| | | ■ Naplemente: Budapest: 16:21 | <i>Debrecen: 16:09</i> |
| 18. | V. | Mt 9:28-29 | Hittel |
| 19. | H. | Jn 16:22-23 | Szomorúság helyett öröm |
| 20. | K. | Ézs 26:3 | Garantált békesség |
| 21. | Sz. | Jn 12:35-36 | Hinni a világosságban |
| 22. | Cs. | 1Jn 3:2 | Örök sorsunk |
| 23. | P. | Jn 5:28-29 | Feltámadás |
| 24. | Sz. | 2Móz 4:11-12 | A Teremtő bátorító szava |
| | | ■ Naplemente: Budapest: 16:31 | <i>Debrecen: 16:19</i> |
| 25. | V. | Mt 7:20-21 | Árulkodó gyümölcsök |
| 26. | H. | Róm 5:1 | Békesség Istennel |
| 27. | K. | Róm 11:20 | Óvás a felfuvalkodottságtól |
| 28. | Sz. | Zsolt 139:23-24 | Hítből fakadó kérés |
| 29. | Cs. | Mt 5:3 | A lelki szegények |
| 30. | P. | Mt 5:4 | Akik sírnak |
| 31. | Sz. | Mt 5:5 | A szelídek |
| | | ■ Naplemente: Budapest: 16:41 | <i>Debrecen: 16:29</i> |

„Imádkozzatok, hogy kísértetbe ne essetek” (Lk 22:40).

- | | | | |
|--------------------------------------|-----|--------------|-------------------------------|
| 1. | V. | Mt 5:6 | Akik az igazságra vágnak |
| 2. | H. | Mt 5:7 | Az irgalmasok |
| 3. | K. | Mt 5:8 | A tisztaszívűek |
| 4. | Sz. | Mt 5:9 | A békességre törekvők |
| 5. | Cs. | Mt 5:10 | A háborúságban kitartók |
| 6. | P. | Kol 3:12-13 | Együtt, egységben |
| 7. | Sz. | Lk 22:27 | A Mester, aki szolgál |
| ■ <i>Naplemente: Budapest: 16:52</i> | | | <i>Debrecen: 16:40</i> |
| 8. | V. | 2Kir 6:16-17 | Láthatatlan túlerő |
| 9. | H. | Lk 10:41-42 | Választás |
| 10. | K. | Mt 26:41 | Vigyázni kell! |
| 11. | Sz. | Jn 15:10 | Engedelmesség és szeretet |
| 12. | Cs. | Fil 2:12-13 | Az üdvösség érdekében |
| 13. | P. | Jób 10:12 | Élet és kegyelem |
| 14. | Sz. | Jel 22:14 | Engedelmesség és a jutalom |
| ■ <i>Naplemente: Budapest: 17:03</i> | | | <i>Debrecen: 16:51</i> |
| 15. | V. | Jn 3:17 | Nem kárhoztatni jött |
| 16. | H. | Eszt 4:13-16 | Ki tudja? |
| 17. | K. | Mt 5:16 | A jó cselekedetek világossága |
| 18. | Sz. | Ef 1:18 | Megismerés |
| 19. | Cs. | 1Jn 4:8 | Az Isten szeretet |
| 20. | P. | Ézs 65:21-22 | Az állandóság ígérete |
| 21. | Sz. | Jer 6:27 | Őrallóként élni |
| ■ <i>Naplemente: Budapest: 17:14</i> | | | <i>Debrecen: 17:02</i> |
| 22. | V. | Mt 6:10 | Isten országa és akarata |
| 23. | H. | Péld 11:27 | Méltó jutalom |
| 24. | K. | Mt 13:45-46 | Mindent az igazgyöngyért |
| 25. | Sz. | 2Kor 13:5 | Önvizsgálat |
| 26. | Cs. | Jób 1:8 | Az igaz Jób |
| 27. | P. | 1Thessz 5:18 | Hálaadás |
| 28. | Sz. | Zsolt 51:6 | Bűnbánat |
| ■ <i>Naplemente: Budapest: 17:25</i> | | | <i>Debrecen: 17:13</i> |

„Mert az Úr szemei az igazakon vannak...” (1Pt 3:12)

- | | | | |
|--|-----|-----------------|--------------------------------|
| 1. | V. | Zsid 12:1 | Legyünk kitartóak! |
| 2. | H. | Mt 26:29 | Jézus fogadalma |
| 3. | K. | Ruth 2:20 | Áldás |
| 4. | Sz. | Róm 13:10 | A szeretet nem illet gonosszal |
| 5. | Cs. | Zsolt 74:19-20 | Könyörület |
| 6. | P. | Zsid 11:6 | Istennek tetszeni |
| 7. | Sz. | Hós 6:3 | Megismerni az Urat |
| ■ Naplemente: Budapest: 17:35 Debrecen: 17:23 | | | |
| 8. | V. | 1Móz 4:7 | Légy ura a tetteidnek! |
| 9. | H. | Jn 15:15-16 | Jézus barátai |
| 10. | K. | 1Móz 28:15 | Isten védelmét élvezve |
| 11. | Sz. | 1Tim 2:5-6 | Megváltó Urunk |
| 12. | Cs. | Jn 14:1-3 | Jézus helyet készít |
| 13. | P. | 1Móz 45:5 | Isten akarata |
| 14. | Sz. | Mk 10:44-45 | Hatalom és szolgálat |
| ■ Naplemente: Budapest: 17:46 Debrecen: 17:34 | | | |
| 15. | V. | 1Móz 50:20 | A rossz jóra fordul |
| 16. | H. | Zsid 12:28 | Istennek szolgálva |
| 17. | K. | Zsolt 126:2-3 | Öröm és hála |
| 18. | Sz. | Mk 11:24-25 | Hittel kérve, megbocsátva |
| 19. | Cs. | Mt 11:28-30 | Jézus ígáját felvéve |
| 20. | P. | Jn 12:44-46 | Jézus és az Atya |
| 21. | Sz. | Mik 7:7-8 | Az Úrtól várt szabadítás |
| ■ Naplemente: Budapest: 17:56 Debrecen: 17:44 | | | |
| 22. | V. | Jel 3:21 | Győzelem, királyi szék |
| 23. | H. | Róm 10:11-13 | Nem szégyenül meg, aki hisz |
| 24. | K. | Jn 11:25-26 | Feltámadás és élet |
| 25. | Sz. | Gal 1:10 | Kit követek? |
| 26. | Cs. | 1Thessz 3:12-13 | Szeretetben, erősen, tisztán |
| 27. | P. | 2Kor 4:16 | Belső megújulás |
| 28. | Sz. | 1Pt 2:12-13 | A rágalom ellenszere |
| ■ Naplemente: Budapest: 18:06 Debrecen: 17:54 | | | |
| 29. | V. | Ef 6:10-11 | Erő és védelem |
| 30. | H. | 1Kor 15:52-54 | Az élet diadala |
| 31. | K. | Ézs 40:21-22 | Mindenható Istenünk |